

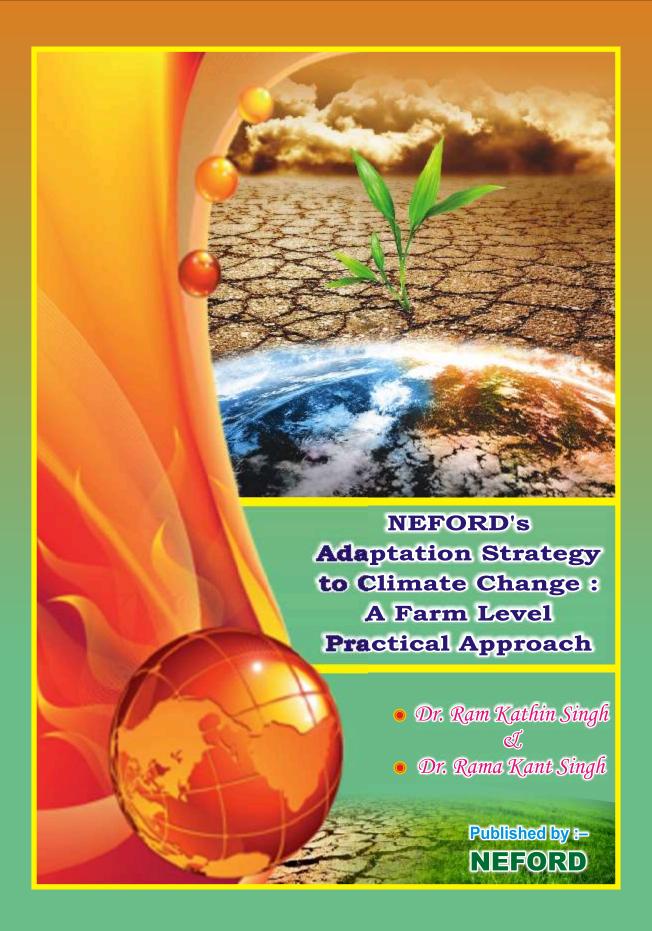


NEFORD Nand Educational Foundation for Rural Development

(Registered under Indian Societies Act, 1860)

A Vehicle for Empowerment of Rural Masses and Sustainable Agricultural Development





मऊ जागरण स्वागती, 29 मार्च 2018. www.jagran.com

उफ! ये मौसम का कोई सिस्टम ही नहीं रहा

केरोकर के जिसान से कारत करत के भरेतु हरण यह कि अर्था से गर्मी ने अराब का असा दिवाना शहर का रिफ है के क्या जा ने होने पहले नी। अने हे ती जैस्त्रे पुत्र बात्ती सुमात देवे वाली wien er eft Er un wlinde nut auen नहीं रक्षा है वरिक विवास क्या वर्ष से हाति तरह के हातात का रहे हैं। एने की बहुर्स अर्थाएं, कार्ट का कम होता कीवन और वर्षी के रिलों में कुछे का नजरत नमा अखिरी दिनों में चरी बन्धत और विन्तरकारी कहर,....स्तात है की पर दिख रहा है। 15 पून में शुरू होते कोमन का जोई किएका ही वहीं हर एक जानर नहीं का बीधन विकास कर है। सामकार करते हैं कि पर मुख्य असरा- विलंका में का बहुता है। वहि

भीगा पर स्ट्स्त ज या है। जिसित गर्फ हंग्नेट, रूपद और ब्लॉन अट्टू भीगम अक्टूबर में शुभ डॉमें की बाराय पर्छ पात्री है। सभी भी अलीव हो ह बाद की बानों रावे हैं। इस्की पा उसरें- दिवंगर है क्रमा कराने तक एक सह पूर्व रोलाई में जुन्द विके अवीव पर अज़ाब को तम पहले के बाद दिए वर्डी निर्देश भारत की निर्वास की कुछ इस देश - चाबक। अस्थित का करा हो गया है। भी है कि बता राजे कका का बाहबात. जोराज के बहतते बंब के अनेक



पहले सुखा, बाद में बाद, घट गवा जारे का मह

• बदले वातावरण में बढ़ गई गर्मी व बरबान की मिवाट

भोजत कमिंगका अगर है। पूर का पूर कर्ष के एक अपनी दीर में सूत्र्य की विश्वविका समाने का रही हैं जो विश्ववा हमी हीनते में भारतार्थ एक तेवा देश मात में बाद का कहा देखते की जिल हहा अहाँ सभी तह प्रकार की बीचन है। इसके कहा किर वही तभी। आहे का दिसमा पड़ा में पान गत है। परत



क्रतिकट्ट परिसर में लाग अधीमेटिक केंद्रर स्टेशन।

उनके उन्तरी को क्वांतरी में में लिएकर जाता है। पूर्व 21 पार्च को प्रव औप कार्यन दर्श कालाइट, कार्यन गीनी

over find their are It what is more it was बाह्र पर पटने वाले इनाव के बारे में देश के करिय करि रेज़रीक हा, तमकारत विश्व कहते हैं कि विशिक्त राज है बदानो सीवा के अनुसार कतन बड़ में प्रीवर्तन ताना पढ़ेगा। फार्ट टर्ज में तैवार होने वार्ता एकालों की उजसियों को अपनाम कोण, सब्द ही ऐसी नांत प्राथतियों की जोज नकने ने सक्ता हो। यही नहीं खेरी की इन्यानी भी प्रश्नावतर में बराजकर देखानिक और जातिक और तार्वी होती। उन्होंन

मुक्तन रेखा पर ताल है जो सुक्त दियों अन्तराहद मैंकी निर्फेशो मैंच नालावान में भूगतारोप जापनार। इसी फारू पीराय feedur trit is organ feeconier रेजों कर और उसके प्रत्येक नागीक इस बन्द्रों और विल्डीनत कर को बना

लबोन से पूर्वी उत्तर प्रदेश के कई जिलों में जलवायु परिवर्त-

के कारवर्ष का प्रश्न जरीवार के अवदन पर सवाया जा रहा है।

इस आरत की जानकारी नेकोई के निकेदक छा, सम्बर्धिन

े बी। बसका कि तर्रेक्षण में में तम के बदलत के

नक्षन्तन का अंक्रलन को उनमें सत्ता के उसनी को भी

बहुत्वा आकेला सेकोर्ड के बार्च क्षेत्र दाले विश्वित गांधी में

कार्यकाला का अवयंजन कर कुमको को अपदा प्रवेपन की

लेकर अपन तक के हुने बदलद को किन्तानों के अनुनहीं के

आधार वर साम्रा दिखा आवेगा। बार्स में ४० प्रनिदार्स में महित

पर दूसन कुमको में कार्त कर उनके तिवार एवं अनुपानी की

आदिश देशा अनेया मार्ग प्रथम स्थाह ने हुए हुने इस

जनवारी के समाने जन ही का वर्ष पदमें के बीवन है

कारणों के बात ही चुका पर बाद के दीवन बोती में होने दाले

ज स्थात है। गाला भी है स्थित जानती वतवानु और परेमरित होते मीमर कर से पूरे दिस सन्दात के साम जात ment of filler its formation the

रेड़-पेंचे लगचे से प्रत पर क्लिक पाना

पन्न प्राहित किया है। इसी कर में का बाद में प्रवासित संस्थान होता बीचार जलवायु परिवर्तन के कारणों अभियम रालाय क्षा का है। एसे व का पता लगायेगा नेफोर्ड के भीतक पर रहतर सकते के रित्ये प्रापं कारत में आरोपिटक नेता रहे। रक्षित किर्रे पने हैं। यहां से नीत का : फिल्में कृतिक वर्षों से चीवन में ही को करतार से फिल्म्में की निवति के बाद दी बुद्ध की संकल में भी काइक संबंधी सबी सूचन लीवे कंप्यूटः वरिकार के तक्षण काम एकाई है जो है। आंध्राहर, अन्तर्हर क्षम मेरन में अनना चरित्रते के बहेरतर नेवर्ड गई हों के मध्यम नो पने उन्हार शासकारीर ने प

घटना ज सा अलग्नर-नेपन अपे परिवर्तन कर साथ अपर दिखा न है। इच्छ कई वर्षे से पढ़ को तक मुखे ने कियानों को कथा बेहकर रख है। प्राप्त की भग्ना कराज्य जातार म से देवकार को सकता के अभी हो। है। प्राचा बार्ल वहाँ राज्यन के प्र में नर्ज का औरत लगनर गरन family the and is one in all अंक्षणे स नका आने से धर्म 2002-में प्रस्कार में औरता पाने 1652 का जि WE 2004-06 \$ 1110 Find th 2006-10 A HW 432 64 Roll 1 पति लोगां पर्व में पत्रं सा औरता पर one offered on the read of

मौसम की पैतरेकाजी से बदला फसले का रंग

divorce un des de विशेषकी ए तेन पहुल काम के बतरे नेई की बारिया जुलको सगी etaria una da é sefensa नेतेम्बर, कार्यत्र प्राप्तिकत्त गरी पर, प्रतिशासम् अदि गर्व के संबंध किसान, पानत दूते, बीन्ड का, अस्ति का मदन बोहब रहा, noise and Parket except spine पार्थ, प्रवार प्रज्ञपर ने बसाब कि वे इन बर गेर् की उसकी अधन होने हैं कुल में। अकानक प्रमुख इस के पानते कर नेतुं तेल कुछ में बहुतक

रिकाल हैं। आब है लगान देर दरल पुरायम को मानी का को है। कामने को आहे, कार्य का माना है निवासित का लागीय होनोहाक पीकी कार्य के मुस्तित है। कार कार्य पेड़ पार्ट कर, पार्ट तथा का बहुत आवीरका पार्थ। को उपयासका पट पी है से बढ़ी गर्के पर हैं। उपित बढ़ावान न निवास के सुपोर हिम्मत के देश हा उपयास किए बढ़ी और विवास कार्य के कार्य प्रमुख्य अपना अपने कार्य कार्य है। कार्य प्रमुख्य कार्य के पार्ट का उपयास कार्य है। कार्य कार्य के बार्ट कार्य कार्य कार्य कार्य के कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के बार्ट के कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के बार्ट के कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के बार्ट कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के बार्ट कार्य के बार्ट कार्य कार् बहरी चीवता ही पता है। तेत्र पति को अनेक बीचाना पैद ही की है। पुरुशत मार्थ मझ में ही हो जा सी है। अब न वे माप की कहाकों हो सर्थक अर्थ है। हरका अंग पुर- कुलां कर पूरे पार के भी है और न ही मतन्त्रें को देखें अवाबद्व द्वीने द्वारामान अंद्रामानतन अंद्रामा परिवार पार में वर्ष पा बीवार वहने का कीवा है तोती में बहुता

ता क्या बदल जायेगा मासम चक्र

बार । बाउपने सीमाम पात ने दानाओं के उरदादन को दुनी तक प्रथावित किया है। अगर पत्ती राजार पत्ते हो अर्थ करो दिनों में नवर्ष आबादे का दि मनन वृत्रिकत हो आगा। देश से वर्ष के स्थाने कर की बेवर्ड करन से की हो था हो है। होर से नेवली के हानों जन की उपक कम हो नहीं है। of the versit is in its teek also, as it for

अपन्य बाद अकर उनकी शरी मेरना पर धनी कर देती हैं। बाद पदी से धार की कटाई देर वे और इतकी वाल में गेंद्र की कारत में किरोबा मेंद्र में उन्हें की क्षाने शुक्ष हुत्ते से कि तर्की आगंध

इनकी हा पेट्र करें तो के नहीं के पाले उदय और लेकिय की बोक्सी होनी कुल्लिमा ऐसे हालक में लेकी को इनक स प्रपूर्व के लिए करें का स्थार केंद्र होना विस्त कर करी A war are in set & with some series of a C th anबत्रक कि पान के लेव में पूर प्रकार की कई नई प्रवर्तिक

सुखा से न हों परेशान, छोड़िये जोताई, सीधे बोइये धान परिष्ठ कृति वैद्यानिक डा.टमकठिन के पाप हो जेगई, वेपई, विकार, सर

शिह की किराओं को रासाह

should be see for the organism and title spower was

क्षण राजुने हैं। कृषणी भी पामानात केरी भा गोर पीएकर पीरिवर्टिकों को रोखते हर Kin: क्या हुआ के प्रश्ने नहीं हुई, बार हुआ: विस्त हिनक इस दिएए में कटन उत्तर ते अब तम योग जीर नहीं जा तथे। क्यें - च्योंपे। अप तक बी पांचा नहीं है पत door it far many self from the area, that he finds and self sight it sitesan affect per succeed air, streams from and all moves if the ent set करीओं के पैछे बारून प्रोहिने और खातें को बोर्स्ट कर देने से विद्धी पत्थ men uper for alter ofte delit first men it alter than the series was respect क्षित्र के दिन्न क्षेत्र की उसे देशे और तहा - नव्ह की उसी है उन्हा आह में चीजितित को र देशिको । असीन गरिनो, अरक्ती फासर - व्यति हैं। हरक करने के बाद किसान प्रतिका If the co fits within the fe few factors the first the con fields likens बार्स से कार को ने कार पर पूर्व और नेता की मीत में में में में warm white the fightest it gas revene figure and save in areing मा को राज साबित का रिकाम है जाने, जेहन भी पंचाई काते हैं पांचु इस बार से प्रमेनों के साम्या है। एक्स पो जानी जगह जाते हुई थी नहीं और सकार देन बोड़ा श्रम विद्यार सोलें करिने। जेते शिल हुए व्हर्ण की तो सेलें के लिये हुनते मुखे के मीतार में किरावरों के तिसे प्रतान अस्मान कि उत्तका कोई फानदा नहीं। सो क्षेत्र कुछ की रह गरे और वर्त का हरासा allow with feature in baltel for well-well that spell tolt for with after their or executes the way if he was at seven the or at high pe thread is some years till first tillholind it gife feiterit a hadrelt होती के विकास को सुमार के अवस्थित होंगे। कर सुप्रका में कि ऐसे मेरिका में खेल औ all converges self ; and he forced at a short make it youlge drig at red it account it do not force drit reds it. हों अर्थित में पक्षी वाली पूर्व की अधिक बोदी बहुत गर्ने को मुखकर खुरू हो। केवल बीद लगावर वैधिक खादी के साथ रीतों के बोर्ड की सर्वाप से गोपी. कारेंगे और शाका की तरू नहीं मिनेया। रोबार्ड कर देने पहारिये , ऐसर कारोर विभावन । सार्वाच्ये इन्ह सामात में मोरी दिन मार्वान - मोर्च के बारण नहीं पूर्व अधिक

और पर होने को सभी को आसमें हैं



-जाराम वर्ष धार को वर्ष प्रवर्तिये का प्रोधम नाने के जा पर भी हो-भी और पुश्चिक को दीव विकृत्व दिखान का ता है।

अभी तक हो सकी है मात्र ३७ प्रतिशत रोपार्ड

ata capin at alter manu to and sich found as go on its that its facult set from to it with करी पर रही के रहते भी इस सर से off mir to \$1 floir & link as wind our at they do do not brust By the formal in their and of our which about more thank on when of the firmer to a region go their of its of resilient pe most of said till it through the solt of gaily offerances shift all tools of

बेहता परिवार देखे। हा प्रतके बाद पातन alt fine raph is first men-more or fitted in find senson wir ren ub

विश्वास न हो तो आहवे

पत्र : धार भी ग्रीओ बोधाई भी प्रहित्स पा परि जा भी संसप से पर इस अवस्थित की मुख्यानय के प विकारित पूर विकार विकार कर है। वहां बहुत के बोर्ड में उन्हें हैं। इसके फिट महें-महें बाज कुट के वहितीर तरह में। वहां प्रीप्ति बोजार कि 'सई बार की प्रधान और निर्मे केई गरी पत्र अ



और दिन से बंजाई के पूर किसाने प्रश्चिमा



उसी के अभाव में मोताराया कर से बीचे गये वाल अकरे के बागार घर।

माध्यम से उन्हें बान की फारत को दाल. की पतानों का हाम देखावर ही अंदाका 'बाद उनमें पर हक बाकी सिंपाई के बा देखार किया रहा में मुद्द की मात्री हैं। जात्रा मां भारत है कि जा तेमा किये पूर भी प्रमाण की मात्रे हुए भी में देखा पर अस्पाल है नेमोर्ट के मुख्य करनेवारों जो देशों को मात्रे को बेहर करना है और है मुख्य स्था है। नेमोर्ट के बेह want the act of the west if the it makes of it will unless the takes are the it were for stone or तीं के राज में मारित में तीनों के उन्हों हुत। तमें चार मिट्टी में उतिहरू मात्र में दिन्हें कि मारि को नारित तमें प्रतिकार निर्मित

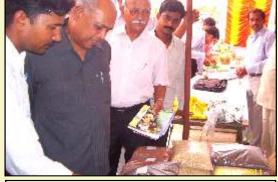
जेले जहां सामान्य से एक चौथाई भी नहीं वर्षा हुई

जिला.	ओसत वर्षा होनी चाहिए	वर्ष हुई	औररत वर्षा का प्रतिशत
गीतमबुद्ध नगर	200 R. Al.	17.3 मि. मी.	8.7 Pa.ell.
गातिसाबाद	200	17.3 4	8.7
अध्यक्षिकर समार	304	31	10.2
पीलीभीत	397	40.8	10.3
Statist	187.4	23.2	17.4
रामपुर	279.3	40.3	14.4
कुशीकवर	357.9 .,	55	15.4
W35	300	46.1	15.4
Sta	100.6	30.4	16.1
बसरामपुर	36779	58	16.2
देवरिया	357.9	75.5	20.5 ,
John Comment	236.9 ,,	51.5	21.7 ,
ज्यतिबाषुले नजर	279.3	62.5	22.4
वलिया	290.8 ,,	65.9	22.7
बिजनीर	305	77.8	23.9
मिलपुरी	100.4 //	45.2	24
उ श्तिसद	187.4	45.8	24.4

बीते पांच वर्षों में जुलाई माह में हुई बारिश औसत से विचलन कल बरसात (मिमी, में) 47 फीसदी कम 2004 147.3 पांच फीसदी कम 2005 263.0 24 फीसदी ज्यादा 342.0 4 फीसदी कम 246.7 61 फीसदी ज्यादा 2008 444.3 80 फीसदी कम 2009 59.0 अब तक

Nand Kharif Kisaan Mela, 2011





Dr. J. Prasad, Chairman, Higher Education Commission visiting Stalls

Nand Kharif Kisaan Mela, 2012





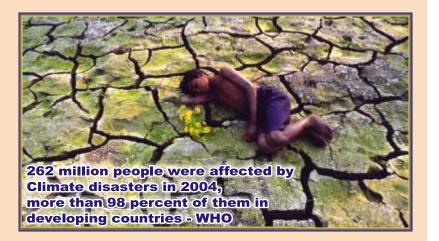
Dr. R.P. Singh and Dr. N.K. Singh receiving Krishak Mitra Samman at Kisaan Mela





CLIMATE CHANGE

NEFORD's Adaptation Strategy to Climate Change: A Farm Level Practical Approach



-: Work Done Under :-

National Initiative on Climate Resilient Agriculture (NICRA)

—: Sanctioned by :—

Central Research Institute for Dryland Agriculture (ICAR), Hyderabad



Nand Educational Foundation for Rural Development

Head Office: 1, Devlok Colony, Church Road, Vishnupuri, Aliganj, Lucknow, Uttar Pradesh (India) Mobile: 09721719736 Phone: 91-522-4015742 Fax: 0522-2323226, 0522-4015742 Website: www.neford.org Email: rksingh@neford.org Delhi Office: A-25, Second Floor, Vikalp Apartments, 92, I.P. Extension, Patparganj, New Delhi92 (India) Phone: 91-11-22243425 Mobile: 91-9811318445

Dr. B. Venkateswarlu, FNAAS

Director, Central Research Institute for Dryland Agriculture (ICAR),

Santoshnagar, Saidabad PO Hyderabad 500 059, AP, INDIA

Ph:+91-40-24530177; Mobile: 9652988265

Fax: +91-40-24531802

Alternate Email: director@crida.in

Foreword

Active participation of farmers is critical in assessment of field level adaptation strategies to climate variability. Though, there are many best-bet practices which can help farmers to cope with climate variability, farmers are not aware of these practices and their adoption. Hence, there is an urgent need to demonstrate the climate resilient agricultural practices in the vulnerable districts, so that the performance of the technologies can be scientifically assessed and feed-back on adoption constraints are documented. In this context, several attempts are being made to demonstrate climate resilient agricultural practices in most of the vulnerable districts of the country through Krishi Vigyan Kendras, Agricultural Research Centres and Non-Governmental organizations.

In this context, Nand Educational Foundation for Rural Development (NEFORD), Lucknow has taken up the participatory technology demonstration project under NICRA covering the flood prone districts of Eastern UP. The organization has successfully demonstrated several sub-mergence tolerant varieties of paddy and quantified the impact of such technologies on yield and farmers' income. NEFORD has also studied the advantages of sanda method over transplanted rice in flood prone regions. Based on the two years demonstrations, farmers in the districts have immensely benefited and the organization is planning to upscale the technologies in 18 more villages during the current year. The unique participatory approach adopted by NEFORD has resulted in successful implementation of the project.

I complement the scientists of NEFORD and the farmers in the target villages for their collaborative effort in tackling one of the most important problems like climate change and bringing out this publication which I am sure will be useful to farmers and extension staff working in the region.

Dr. B. VENKATESWARLUDirector, CRIDA

Nand Rabi Kisaan Mela, 2011





Dr. S.K. Datta, DDG (Crops) in Kisaan Mela





Dr. N.P. Singh being honored by Dr. S.K. Dutta

A view of meeting hall at Kisaan Mela

Nand Rabi Kisaan Mela, 2012





Dr. Rajendra Prasad PD, DSR, Mau

IRRI Scientist honoring a farmer at Kisaan Mela

NEFORD's Adaptation Strategy to Climate Change □ 23 □

Seed Distribution and Orientation Training









A view of farmers' group discussion on Climate Change in Different Villages









Abstract

The agriculture in eastern U.P. is largely rainfed and characterized by dominance of small and marginal resource-poor farmers who often face the problems of flood, drought and salinity, resulting in low and unstable yields. As per the Inter-governmental Panel on Climate Change (IPCC), the impacts of climate change could be significant for the poor people living in the marginal areas, like that of eastern U.P. Keeping this in view, the present project was sanctioned under the competitive grants of NICRA with the main objectives of understanding the long-term pattern of weather parameters and farmers' perception of climate change and accordingly, to identify and promote technological options adapted to these changes and minimize farmers' losses. The project, therefore, firstly reviewed the long-term (1901-2007) weather data in the project districts and conducted Focus Group Discussions with the farmers and short-listed major problems that needed solution. Beside labor shortage, early drought, flood, salinity and early rise in temperature at the time of grain filling, were found to the main limiting factors. In view of these, large scale participatory technology testing and demonstrations were conducted covering the flood-prone, drought-prone and salt-affected areas in districts Mau, Ghazipur and Azamgarh. Various options were tried and suitable technologies were identified and the impact of such technologies on yields and farmers' income were quantified. Selection of rice and wheat varieties tolerant to various stresses, as identified above, and the safe and productive stress-specific cropping systems have been the major outcomes of this project. Similarly, while direct seeding of rice and zero-till sowing of wheat were promoted as labor-water saving crop establishment methods, an age-old practice of sanda (double transplanting) method of rice cultivation was improved and promoted to overcome the problems, especially arising due to delayed monsoon. Although the method required more number of labor for double transplanting, the increased cost was duly compensated by the fact that it required less quantity of seed, less number of life-saving irrigations, no cost of weed-management and gave higher yields. The average net return in case of sanda method was Rs. 29,000/- per hectare, compared to Rs. 12,000/- per ha for normal transplanting. Significantly, the project also evolved an innovative '5-step transfer of technology model' that ensured accelerated pace of technology transfer by reaching out large number of people-stakeholders, in shortest possible time. During the last two years of project period, NEFORD could sensitize more than 23 thousand farmers in eastern U.P.

Citation:

Singh, R.K. & R.K. Singh. 2013. NEFORD'S Adaptation Strategy to Climate Change: A Farm Level Practical Approach. Nand Educational Foundation for Rural Development (NEFORD), 1, Devlok Colony, Church Road, Vishnupuri, Aliganj, Lucknow-226022 (U.P.), INDIA, 24 pp.

Institutional Publication 2013/1

Published by:

Ram Kathin Singh Director, NEFORD

1, Devlok Colony, Church Road, Vishnupuri, Aliganj, Lucknow-226022 (U.P.), INDIA Mobile: 09721719736

Acknowledgment:

We thankfully acknowledge the generous support of NICRA staff, especially Dr. B. Venkateswarlu and Dr. M. Maheshwari, and the ICAR for giving us the opportunity to participate in the National Initiative on Climate Resilient Agriculture, and to contribute to farmer's welfare.

Dr. Ram Kathin Singh Director, NEFORD

Dr. Rama Kant Singh Principal Investigator

Training on Weed Management and Distribution of Weedicide Packets













NEFORD's Adaptation Strategy to Climate Change □ 21 □

Field Days









Field Gosthi in Village - Gohta, District - Mau IRRI Scientist Dr. D. Mckill speaking to farmers.



NEFORD's Adaptation Strategy to Climate Change : A Farm Level Practical Approach

Introduction

World-wide efforts are being made and strategies developed for mitigation and adaptation to climate change. But what is really more important is the action at the farm level, because it is the farmers who face the impact of climate change in their daily life. Sudden rise or fall in temperature, excessive rains causing floods or scanty rains leading to water stress and droughts, changing pests complexions, soil-health problems and salinity are some important factors causing concern and need immediate attention. Inter-Governmental Panel on Climate Change (IPCC) considered India to be 'acutely vulnerable to the impacts of the climate change'. However, a report on impacts of climate change on Indian agriculture maintained that these impacts would be region-specific, and could be significant for poor people living in marginal areas. The eastern UP, characterized by dominance of small, marginal resource-poor farmers often facing the problems of flood, drought, salinity/sodicity, is likely to have large impacts of such climate changes. Keeping these in view and also the fact that there already exists some robust technological options that could help reduce farmers' losses, the present project was proposed and was sanctioned under competitive grants of NICRA, with following three broad objectives:

- 1- Analyzing changes in weather parameters and farmer's perception of climate change, impacts and coping mechanisms.
- 2- Matching and promoting technological options to adapt to climate change to minimize farmers' losses.
- 3- Capacity building and reaching out large number of farmers in shortest possible time to make them aware and prepare for the days ahead.

Methodology

To properly understand the pattern of climate change, long term (1901-2007) secondary data on rainfall distribution pattern, temperature, occurrence of floods and droughts in the three project districts- Azamgarh, Mau, Ghazipur, were studied, and the pattern of

climate variability thus obtained was further confirmed by an output from a 'Focus Group Discussion', conducted in these districts, with farmers. This study helped us shortlisting major agro-climatic and socio-economic problems and, accordingly, matching and promotion of technological interventions, were planned.

Salient Findings

Weather Data Analysis & Farmers' Perception

The long term (1901-2007) rainfall data analysis of eastern UP districts clearly showed that after 1980's, the annual as well as seasonal rainfall has remained bellow the normal. Decline in rainfall, particularly, in early months of monsoon i.e., June, July, August, September has become more frequent after 1980's, making early drought a regular feature, resulting in either delayed nursery raising, slow and stunted seedling growth and/or transplanting of aged seedlings. The farmers, having no proper irrigation facilities, often abandon and burn the nursery in the field itself. During kharif 2012 for example, only about 34% farmers transplanted rice with less than 30-day old seedlings, while 50% farmers used older seedlings and the remaining 16% could not transplant and discarded the nursery.

The findings of the 'Focus Group Discussions' with the farmers further confirmed the weather data analysis findings. Besides labor shortage, flood, drought, salinity and early rise in temperature during summer, were identified as the major limiting factors.

Technological Options

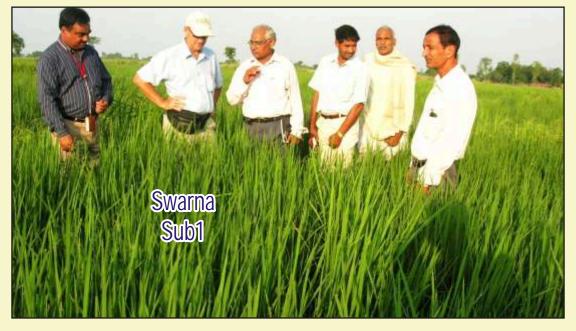
In view of the problems identified as above, NEFORD zeroed in on following options:

- (i) stress tolerant crop varieties; (ii). cropping systems for stress-specific ecologies; (iii). water-labor saving crop establishment methods; (iv). organizing seed-producer farmers's groups and knowledge dissemination; and finally, (v). develop an innovative transfer of technology model for fast spread of mature technologies.
- (a) Selection of stress tolerant crop varieties: A large number of candidate genotypes were tested and screened for resilience to different stresses using 'Mother' and 'Baby trials' and the promising varieties/genotypes were identified through 'Participatory Varietal Selection' (PVS) approach and are being promoted among farmers, as the adaptation strategy to reduce vulnerability (Table 1).

A crop of Swarna Sub1 recovered after 10 days of submergence



An IRRI team inspecting performance of Swarna Sub1 on farmer's field



Field performance of the salt-tolerant rice variety CSR-36 on farmer's field



Comparative performance of CSR-36 vs Moti in Sanda Method of Rice Cultivation



The performance of some of these varieties as obtained on farmers' fields during 2012-13 are given here.

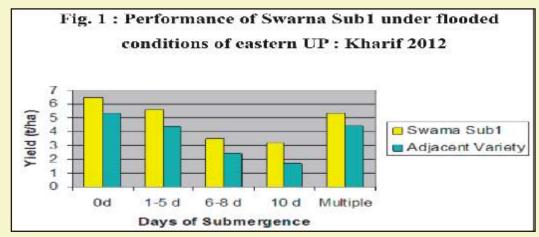
Table 1: List of selected stress-tolerant crop varieties

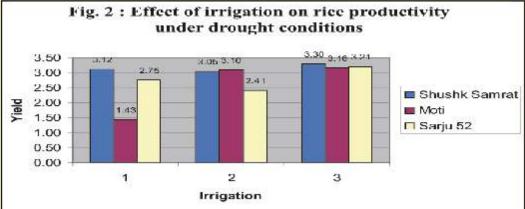
Crop Varieties	Main Feature	Remarks
Rice Varieties	Service Company of the Property of	PERSONAL PROPERTY OF THE PARTY
Swarna Sub1 IR 64 Sub1	Submergence tolerant	Jointly released by NEFORD and NDUAT
CSR 36 K 3119	Salt-tolerant	CSSRI varieties Jointly released by NEFORD and GBPUAT
Sushk Samrat Sahbhagi Dhan	Drought-tolerant	NDUAT variety Variety of Central Rainfed Upland Rice Research Station (CRRI), Hazaribagh
Wheat Varieties		
KRL 213 KRL 210	Mild salt tolerant	CSSRI, Karnal
KRL 19	High salinity tolerant	CSSRI, Karnal
NDW 1014 Haina WR 544 PBW 154	Short duration heat tolerant	NDUAT, Faizabad CSAUAT, Kanpur IARI, New Delhi PAU, Ludhiana

Swarna Sub1: Although 2012-13 was a drought year, several rain fed areas in eastern UP got submerged for varying durations. The data collected from 185 farmers' fields of these areas on performance of the submergence tolerant rice variety, Swarna Sub1, showed that with the increasing duration of submergence, the reduction in yield of Swarna Sub1 was much less, compared to the adjacent variety planted by the farmers (Fig. 1). Even after a submergence of about 10 days, Swarna Sub1 gave an yield of 3.2 t/ha, while the yield of the control variety was only 1.7 t/ha. On the whole, Swarna Sub1 produced about 1 t/ha more yield than the control variety.

Also, in trials during previous years, Swarna Sub1 has shown similar advantage over the checks. Thus, U.P. having about 7-8 lac hectare of submergence-prone area, if Swarna Sub1 is promoted, it can easily produce 7-10 lac tonnes of additional rice in U.P. and also help flood-affected farmers to raise their income.

Shushk Samrat: The performance of a drought tolerant rice variety, Sushk Samrat, was compared with two prominent local varieties, Moti and Sarju-52, under three levels of irrigation on farmers' fields. While with three irrigations, all the three varieties yielded at par, with two and, particularly with one irrigation, Shushk Samrat out yielded both the checks. With one irrigation, the average yield of Shushk





Samrat was 3.12 t/ha, compared to only 1.43 t/ha of Moti and 2.75 t/ha of Sarju 52 (Fig. 2). In addition, to compare the performance of Shushk Samrat with Moti, as the check under an NFSM program, a cluster demonstration of about 125 ha on farmers' fields was also conducted. Shushk Samrat gave an average yield of 4.29 t/ha, as against 3.4 t/ha of Moti. Shushk Samrat, therefore, seems to be an excellent adaptation option for improving productivity of the 6-7 lac hectare drought-prone rice areas in U.P.

CSR-36: A salt-tolerant rice variety, CSR-36 was the third variety identified by NEFORD. This variety was also tested under NFSM cluster demonstration program, covering an area of about 132 ha in district Azamgarh, Mau and Ghazipur. CSR-36 gave, on an average, a yield of 3.36 t/ha, compared to 2.45 t/ha yield of Sarju 52, the check variety. Segregating the CSR-36 performance according to the level of salinity, showed that it gave 1.85 t/ha yield under the severe salinity

Performance of a drought-tolerant rice variety Shushk Samraton farmers' fields (District - Mau)



Comparative performance of Shushk Samrat vs Moti on farmers' fields.



Participatory Varietal Selection in a Wheat Mother Trial in Village Baharipur, District - Mau





condition, as against only 0.8 t/ha of Sarju-52; the yields were much higher, ranging between 3.3t/ha and 4.4t/ha, under medium to mild salinity conditions. (Table 2). Thus, CSR-36 provides an excellent option to improve and stabilize rice productivity of about 6 lac hectare salt-affected areas of U.P.

Table 2: Performance of CSR 36 under different levels of salinity

Level of Salinity	No. of farmers	Avg. yield (t/ha)	Productivity Range (t/ha)
Severe	18	1.85	<2.5
Medium	52	3.35	2.5-4
Low	25	4.45	×4 = 5 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
	Total	95*	
A STATE OF THE STA	Overall Average	3.36	

^{*} Five farmers crop have failed out of 100.

Stress-tolerant in Wheat: The field screening of wheat varieties has lead us to identify four heat tolerant short duration wheat varieties namely, Halna, NDW 1014, PBW 154 and WR 544 (Table 3). Similarly, for the high sodic soils, KRL19 and for mild sodic soils, KRL 210 and KRL 213 were found to be highly productive and stable. Large scale promotion of these varieties are being undertaken (Table 4).

Table 3: Performance of late sown (16-01-2012) wheat varieties in farmers field (20 farmers)

Varieties	Average yield (t ha-1)	HI
HD 2985	0.94	42
WR 544	2.06	39.5
PBW 373	0.88	27
Halna	2.66	48
HD 2733	1.23	46
PBW 154	2.12	41
HD 2643	1.10	45
PBW 502	1.64	32

Table 4: Screening of wheat varieties under low and high salinity levels

Salinity Level	Varieties	Yield Range (t/ha)	Mean Yield (t/ha)	Ш
Mild Salinity	HD 2643	2.39-3.09	2.74	36.1
	HD 1563	2.25-2.91	2.58	34.4
	KRL 213	2.96-3.49	3.23	47.8
	KRL 210	3.92-4.28	3.94	46.3
	UP 2338	2,12-2,69	2,40	38.7
High Salinity	HD 2733	0.74-0.94	0.84	15
	NDW 1014	1.14-1.74	1.57	25
	KRL 19	1.69-2.09	1.89	35

(b) Cropping Systems: Based on two years of field testing, NEFORD has identified safe, productive and profitable cropping systems, suited to three major stresses, faced by farmers in eastern UP (Table 5). While a comparative performance of these cropping systems is being studied, analysis of 'Swarna Sub1' rice - Halna wheat' combination for flood-prone area has been completed. (Table 6). As the data. indicates Swarna Sub1 rice - Halna wheat combination gave a higher net return (Rs. 47,001 per ha) and B/C ratio (2.40) than the combination of Swarna Sub1 with the long duration high yielding wheat variety, HD2285. This is simply because Halna being a short duration (100-day duration) variety, could complete its life-cycle and produce 3.86 t/ha yield even when sown in the first fortnight of January, while HD 2285, a long duration variety, suffered due to hot wind at the time of grain filling and produced much less (1.9t/ha) than its normal potential.

Table 5: Selected Cropping Systems for Different Stresses

Salt affected area	1	CSR-36(rice) - KRL 19 (wheat)
Flood affected area	-:	Swama Sub1 (rice) - Halna (wheat)
Drought-prone area		Sahbhagi dhan/Sushka Samrat (Rice) - NDW 1014 (wheat)

Table 6 : Cost Benefit Ratio of Rice-Wheat Cropping Systems*

Items	Cropping Systems								
THE DOUBLE OF THE BEST	Combinat	ion 1	Combina	tion 2					
	Swarna Sub1	Halna	Swarna Sub1	HD2285					
Yield (q/ha)	42.34	38.55	42.34	19.28					
Cost (Rs/ha)	17,500	16,000	17,500	16,800					
Total Cost (R + W) (Rs/ha)	33,500)	34,30	10					
Gross Return (Rs/ha)	38,106	42,405	38,106	21,208					
Total Gross Return (R+W) (Rs/ha)	80,511		59,31	4					
Net Return (Rs/ha)	47,001		25,01	25,014					
B / C Ratio	2.40 1.72								

*Swarna Sub1-Halna; Swarna Sub1-HD 2285 Note: Data collected from 20 farmers' fields

(c) Crop Establishment Methods: Besides promoting direct seeding in rice and zero till sowing of wheat, NEFORD upgraded and promoted an age-old practice of double transplanting in rice, called 'Sanda Method'. The technique seems to provide an excellent solution to the problems arising due to delayed monsoon.

Performance of a short-duration early maturing NDW-1014 vs long-duration HYV-HD2733 in farmers fields



Performance of a zero-till sown wheat variety HI-1563



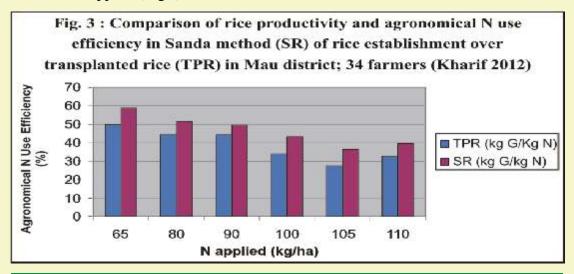
Performance of KRL 19 vs PBW 343 in Saline/alkaline condition in Village - Karanpur, Block - Palhani, Dist- Azamgarh during Rabi 2012-13





Methodology: For Sanda method, the seed bed preparation for nursery raising is done in the same way as for the normally transplanted rice. Well cleaned 4 kg of seed is sown in 40m^2 nursery area, which is sufficient for transplanting 1 ha of area. The seedlings, aged 21-25 days, are uprooted and transplanted @8-10 seedlings per hill in close spacings, covering an area of 400m^2 . This first close transplanted rice in small area, is maintained by irrigating the field when stressed during early stage drought. After 30-35 days, the first transplanted rice is uprooted, roots are cleaned in water and seedlings and tillers are separated. The separated seedlings are re-transplanted using the spacings recommended for transplanted rice @ one seedling per hill in one hectare area. This second time transplanted rice is cared for as the normal transplanted rice.

Field demonstrations and farmers' experience: In May 2012, a group of 50 farmers were trained in Sanda Method of rice cultivation, especially giving them the tips on 'do's & don'ts'. Of these, 34 farmers, each having a piece of land of about one acre, were selected to conduct demonstrations and given seeds of Moti variety, free of cost. They were instructed to plant half of their field using sanda method and other half using normal transplanting. Farmers used fertilizers as per their paying capacity, but only nitrogen was considered in this observation. A comparison of two methods of rice establishment showed clear superiority of Sanda method to normal transplanting, both in respect of grain yield and agronomical N use efficiency. The increase in grain yield due to Sanda method ranged between 0.41 and 0.94 t/ha with a mean of 0.73 t/ha. The agronomical N use efficiency in sanda method was higher than that of the transplanted rice, irrespective of level of N applied (Fig 3).



The cost of cultivation analysis also revealed that rice established using Sanda method was more profitable than the transplanted rice; the net return in case of former being Rs; 28,800/- compared to only Rs. 11,900/- in case of the latter (Table 7).

Table 7 : Cost and return analysis of rice cultivation under Sanda and Normal method of transplanting

S. No.	Items Sanda Method N. Trai					
(A) 1	Cost of seed*	120.00	1,200.00			
2	Seedling raising	205.00	820.00			
(B)	1st close transplanting	1,382.50	0			
(C)	Main rice crop (1 ha)	17,520.00	24,420.00			
(D)	Post harvest	12,218.00	12,218.00			
	Total Cost of Cultivation	31,445.50	38,658.00			
(F)	Grain yield and return	M. T.				
1	Yield (t/ha)	4.71	3.95			
2	Gross return (Rs/ha)**	60,288.00	50,560.00			
3	Net return (Rs/ha)	28,842.50	11,902.00			

^{*} at the rate of Rs. 30 per kg

Advantages and disadvantages: The *Sanda* method of rice establishment has more advantages than disadvantages. It requires only 4 kg seeds to transplant one ha area, while 40 kg seeds are required for normal transplanting, thus there is a saving about Rs. 1,000 per ha. Further, it escapes early stage drought during seedling and vegetative growth period (50-55 days), because it is easy to maintain closely transplanted rice in a small area with limited amount of irrigation water, which saves ground water, diesel for operating pump and manpower to look after. Also, it requires only a few (1-2) life saving irrigations, if drought occurs during vegetative to reproductive to maturity stages, while the transplanted rice needs 3 to 5 irrigations, which again enhances the cost in normal transplanting. It has been observed that the rice transplanted using sanda method bears more number of tillers per hill and all tillers bear panicles and panicles are heavy, the grains fully filled than in transplanted rice.

However, sanda method has two distinct disadvantages also; firstly, it requires more number of labour for two transplanting, uprooting, cleaning and separating of seedlings; secondly, it is suitable only for long duration rice variety like Moti, Swarna, Kalanamak, etc. However, it must be noticed that the increased cost of labour for two transplanting is duly compensated by the fact that sanda method requires less quantity of seeds, less number of life saving irrigations, no weed management cost and gives higher yields.

Summary

- ð• Early drought has become a common occurrence in eastern UP that causes delay in nursery raising as well as transplanting.
- ð• Out migration has increased and there is increased inclination of rural people towards non-farm activities.
- ð• Stress tolerant rice varieties for submergence, drought and salt affected areas and wheat varieties tolerant to salinity and heat, were identified to cope with these problems. Similarly, safe & productive cropping systems specific to these stresses were also developed and promoted.
- ð• Sanda (double transplanting) method of rice cultivation provides an excellent solution to problems arising due to delayed monsoon.
- ð• Farmers generally used higher doses of N while better yield and higher NUE could be obtained with lesser N combined with balance doses of P, K & Zinc.
- ð• Seed-producer farmers' groups were organized, trained and initiated in seed production, especially of stress-tolerant crop varieties.
- ð• An 'Innovative Transfer of Technology Model' was developed that hastens process of technology adoption by reaching-out people in shortest possible time.



^{**} Govt. procurement rate of Rs. 1280 per quintal rice was used for calculation.

- ? Ensuring local availability of seeds: Availability of seed is a pre-condition for spreading a seed-based technology. Generally, the formal system of seed-chain takes a few years before the seed reaches farmers. NEFORD, therefore, promotes farm level seed production by training farmers' groups who, in turn, meet the immediate farmers' seed demand, locally. During 2012-13, the farmers produced 1080q of seed of three stress tolerant rice varieties and 2700q of four wheat varieties which they shared with fellow farmers. We also encourage and monitor farmers to farmers' seed diffusion. A survey of 576 households in 36 different villages of 6 districts of eastern UP, it was found that the adoption rate of Swarna Sub1 among neighborhood was about 35% (NEFORD STRASA Report 2012). Our approach also creates demand and puts pressure on the public and private sector players to hasten the process of formal system of seed production.
- ? Reaching out: NEFORD has evolved and tested a number of novel approaches to quickly reach out people and disseminate knowledge. This, in turn, creates demand for the technology (i.e. seed) and forces Government to change/frame policies to favor speedy dissemination. Our approach includes: organizing seeing is believing trips, walk through farmer's field, theme-based Kissan Mela, District agricultural Development Forums, success stories and use of print and electronic media. During the last two years of project period, NEFORD sensitized more than 23,000 farmers in eastern UP.
- ? Influencing policies: Release of Swarna Sub1, based on only one year (2009-a flood year) large scale field data generated by NEFORD and on-station data by NDUAT Faizabad, was a land mark decision of the State and the Central Govt. to fast spread this variety among the flood affected farmers. Similarly, the decision of Ministry of Agriculture (MoA), Govt. of India to support 10,000 ha cluster demonstrations of stress tolerant rice varieties during 2012-13 under NFSM program provided strong boost to promote adoption of these varieties; NEFORD was the key partner in this program in U.P.

12 NEFORD's Adaptation Strategy to Climate Change

BGS w'nk. Coo<b€E?

Table 8: Yield advantages due to higher and recommended doses of N application	n
alone & with P and Zn in farmers fields (Kharif 2012).	

Fertilizer Dose		tice gr	ice grain yield (t/ha)			Mean yield (t/ha)	% advantages	NUE	and Z	ution of P n (%) to ield
	Fl	F2	F3	F4	F5				P	Zn
N60	1.87	2.12	1.98	2.04	1.71	1.94	0	32.40	0	0
N80	3.00	2.48	2.88	3.10	2.67	2.83	45.88	47.10	0	0
N80: P15	3.72	3.90	4.35	3.65	3.16	3.76	93.81	62.60	32.86	0
N80: P15: Zn5	4.40	4.40	4.20	4.50	3.70	4.24	118.56	70.67	0	12.77
N100	3.75	3.56	3.13	2.52	3.28	3.25	67.53	54.13	0	0
N100: P15	4.04	3.92	3.80	4.30	4.60	4.13	112.89	68.87	27.08	0
N100: P15: Zn5	5.20	4.90	3.90	4.30	5.00	4.66	140,21	77.67	0	12.83

^{*}F1-F5 indicate farmers; NUE = Agronomical N use efficiency

- ß%f£ ó,,å"_cĐ1'• ÅcdR³ðü9šÓ4@XdpÝÞÞÕs•—£°Z° aÂ#eèó ßa3KcÄX¹öWóÿß• ÛŷrÓ\$,,å%†öS_Ž7ŢÕÈq®°÷¾y¶ pÑ2ãD¥fžþ#kÌØ¾¥ c¬†ÖâCß?LdpÑK¬M®ß°ÍÚ;>Ù"fèö3"õ¾%bŸ;Ô'^"ÍÙ:>Ø".k"j e}šì)Š-Øv"ŸažÜzÛMŠë¤°r¦ÿ@¡-ÅÑÝJV·ßkÌÒ°÷@Ş´Ìjv =
- βίΝΖφεbà ¤°ί*‹ὶ·ὶ ~-öW¸Τ'©æ7C¤r¯»(•4•ῦ Ór Ùwf›§³,Ệ*"ô=ܾÛŷÚ;ፎ½% βð èj V·ÃØŷÆ⁄ZfÇ쇓Đ1I†ÃÅÄÖt⊕,•¢οĐèôG¨j, "«·Ïkwü7C¤ΒŒïZf£¯»ÓμοĐR^; βkÌÙ8™Öâï❷š¦¾ÊÖĠΦl½®…´ L-=ž ¡-o ÔÛ<Ì-£Ò g•øYeq®ìM"仅N‹ì \™ú β;›ü:wfÌjË o‡Nጭ?lxÙxÙ:> %Ϊ/íN⁻{Ü=¢Ý °| H@Ö¾ 9šûÊ+ΜΕ⁴¾ÝτùZ&xμ"{Ü

- the advantage was more i.e. 67.5%, 112.9% and 140.2% with the application of the recommended dose of N (100 kg / ha) along with 15 kg P and 15 kg P + 5 kg Zinc per ha.
- ? The results also revealed that application of 15 kg P per ha helped in rice yield increase by 32.9% and 27.1% when combined with 80 and 100 kg N per ha, respectively. In other words, the agronomic use efficiency increased when N along with P and Zinc were used. Zinc contribution to rice productivity was near 13% at both level of N application. This on-farm demonstration helped farming community to understand the role of different nutrients, as balanced dosages, in increasing rice yield.

Transfer of technology-An innovative approach

Goodness of any technology alone is not a guarantee for its fast spread. Certain necessary conditions are needed to be fulfilled to ensure its speedy dissemination. Over 7-8 years of NEFORDS' working with farmers has helped NEFORD to evolve an innovative approach consisting of following steps to accelerate pace of technology transfer:

- ? Characterization and delineation of growing environment: Identification of appropriate niches facilitates targeted testing and dissemination of technologies. To scale up Swarna sub1, for example, we have specified submergence prone (12-15 days) villages/blocks in the districts of eastern UP by using satellite data and GIS (Fig. 4, Table 9). Obviously, the distribution of seeds of Swarna Sub1 in these villages will be a guarantee to its success. Drought-prone and salt affected areas are also being delineated to plan similar strategies.
- ? Adding value(s) to the component technology and developing attractive packages: The fact that Swarna Sub1 is a submergence tolerant rice variety and ensures high productivity even when submerged up to 15 days, does not guarantee its spread for two main reasons: (a) due to shortage of labor, farmers are reluctant to cultivate rice and (b) due to being a long duration (150 days) variety, farmers have to forego the Rabi crop in the following season. To overcome these problems, NEFORD evolved a way-out i.e. direct seeding of Swarna Sub1 as a labor-saving device in Kharif, followed by zero till sowing of a short duration heat tolerant wheat variety, like Halna in Rabi. The farmers readily accepted this package.



Fig. 4: Characterization of submergence prone rice areas for targeted dissemination in block Fatehpur Mandaon (Mau)

Table 9 : List of 18 villages identified for targeted dissemination of Swarna Sub1 in block Fatehpur Mandaon (Man)

Village Code	Village Name				
620	Bairiyadih				
595	Baroha				
617	Bhadaura Hoshiyar Rai				
653	Chak Panday				
596	Chakki Musadohi				
581	Dharampur Bishunpur				
582	Dubari				
663	Harpalpur				
662	Kaakaradih				
592	Kabirajpur				
650	Manauli				
622	Kalyanpur				
654	Chandan Patti				
583	Molnapur				
618	Mudadar Maniyar				
597	Musadosi				
651	Patti Dhusar				
652	Sultanpur Barahgawa				

NEFORD's Adaptation Strategy to Climate Change □ 11 □